

☆ तुम प्रेम का क... ख... ग... भी नहीं जानते, तुम्हें प्रेम करना आता ही नहीं।

☆ प्रेम कोई बच्चों का खेल नहीं है, यह तो फना हो जाने की तासीर है। यह तो तलवार की धार पर चलने के समान है, जिसमें पैर लहूलुहान हो जाते हैं और सारा दिल जख्मी हो जाता है।

☆ इसमें लेने का कोई भाव ही नहीं, इसमें तो देना ही देना होता है, शरीर, प्राण, आत्मा... सर्वस्व... और सब कुछ फना करके भी मुस्कुराना होता है।

☆ प्रेम तो हजारों-लाखों में से किसी एक आध के नसीब में ही होता है।

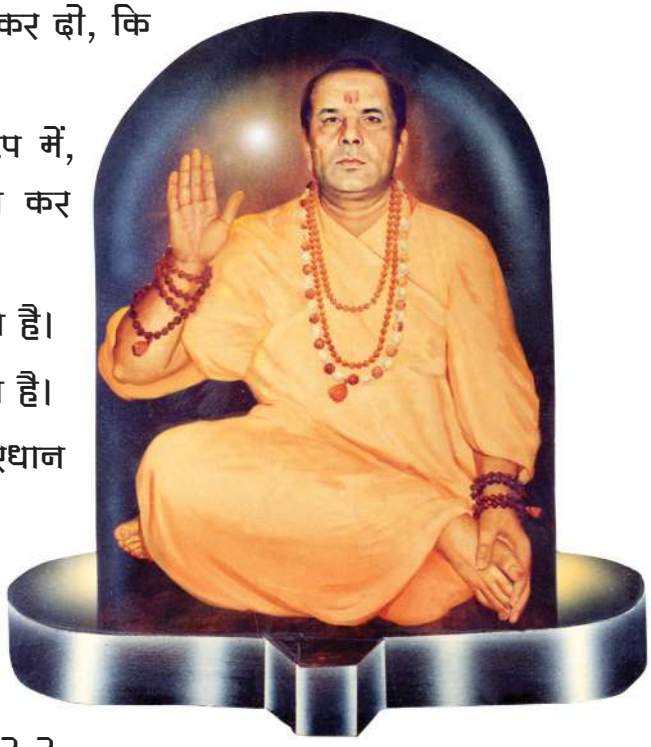
☆ और प्रेम-पात्र... पत्नी, पति, पुत्र या स्वजन हो ही नहीं सकते, क्योंकि इनसे तो वासना के सम्बन्ध होते हैं।

☆ प्रेम तो केवल और मात्र केवल गुरु से ही हो सकता है, क्योंकि उनसे कुछ भी सम्बन्ध न होते हुए भी वे सब कुछ होते हैं।

☆ और जब गुरु से सही रूप में प्रेम हो जाता है तो बुद्धत्व का प्रादुर्भाव हो जाता है।



☆ अब पतझड़ बीत गया है, ऐलान कर दो, कि मैं वसन्त ऋतु ले आया हूं।



☆ शिष्यों के रूप में, साधकों के रूप में, वसन्त ऋतु ने आने का ऐलान कर दिया है।

☆ फिर साधना की पुरवाई बहने लगी है।

☆ फिर मंत्रों की कोयल कुहूकने लगी है।

☆ फिर पेड़ों ने पत्तों के नए-नए परिधान पहिनने शुरू कर दिए हैं।

☆ फिर दुनिया के होठों पर आपकी मुस्कुराहट उभरने लगी है।

☆ मैंने बहुत परिश्रम किया है, विश्व को सजाने के लिए, हरा-भरा करने के लिए, वसन्त को लाने के लिए और वसन्त ऐलान के साथ आ गया है।

☆ तुम मूढ़ हो, नासमझ हो, अज्ञानी हो, ईश्वर रूपी बहेलिये ने तुम्हें दुनियादारी के जाल में उलझाकर रख दिया है।

☆ तुमने स्वयं को इस दलदल में फंसा दिया है, पर कब निकलोगे इस दलदल से, इस कीचड़ से। बिना स्वार्थ के कोई तुमसे बात ही नहीं करेंगे।

☆ फिर किसके लिए इतना खटराग कर रहे हो, किसके लिए बैल की तरह बोझा ढो रहे हो।

☆ क्या मरने के बाद भी धन-दौलत तुम्हारे काम आयेगी, क्या धन-दौलत तुम्हारे साथ जायेगी।

☆ चेत! अभी संभल! जिन्दगी के इस मोड़ पर मैं मिला हूं, तो कसकर मेरा हाथ पकड़ ले, मैं तुम्हें 'अमृत्यु' के पथ पर गतिशील कर दूंगा।

☆ क्योंकि मैं, और केवल मैं ही तुम्हारा हितैषी, निःस्वार्थ गुरु हूं।



शिष्य धर्म

शिष्य और गुरु का सम्बन्ध जीवन में श्रेष्ठतम सम्बन्ध माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी तराजू में तोला नहीं जा सकता। एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।

- शिष्य वह है जिसकी हर समय मन में इच्छा होती है कि दौड़ कर गुरु के पास जाऊं। गुरु से प्राणगत सम्बन्ध होना चाहिए, देहगत नहीं।
- गुरु जानता है शिष्य को जीवन की पगडंडी पर कहां और कब खड़ा करना है, और जहां खड़ा करना है उसके लिए क्या आज्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आज्ञा-पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।
- शिष्य के पास जो भी चिंताएं हैं, दुख हैं, परेशानियां हैं, बाधाएं हैं उन सबको गुरु चरणों में समर्पित कर देना है।
- कोई आवश्यक नहीं कि समस्या होने पर ही गुरु से मिला जाए। गुरु के दर्शन मात्र से ही शिष्य का सौभाग्य एवं पुण्य जाग्रत होते हैं। इसलिए शिष्य निरंतर गुरु से सम्पर्क बनाए रखें।
- गुरुदेव की सेवा किए बिना जो शिष्य कुल-धर्म का पालन करते हैं उनसे मंत्र तथा देवता कभी प्रसन्न नहीं होते। अंतरवाणी, मन और शरीर तीनों से ही सदा गुरु-कार्य में तत्पर रहें।
- शिष्य के पास केवल तीन रास्ते हैं जिनसे वह लोहे से कुंदन बन सकता है - सेवा, समर्पण एवं श्रद्धा, और इन सबका समन्वय है प्रेम। गुरु से प्रेम द्वारा ही शिष्य सब प्राप्त कर सकता है।
- गुरु ईश्वर का प्रतिबिम्ब है जिसे शिष्य साकार, अपनी आंखों से देख सकता है। ईश्वर को शिष्य ने भले ही न देखा हो पर गुरु के माध्यम से ईश्वर को हृदय में स्थापित कर सकता है।
- जब आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगें तब शिष्य को समझना चाहिए कि गुरु के दर्शन कर लिए।